RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

विचारक विश्वास और इमारतें

Chapter-4 | Part-6



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

1. लोक परंपराएँ
2. नयी धार्मिक परंपराएँ
3. हीनयान या थेरवाद
4. पौराणिक हिंदू धर्म का उदय
5. वैष्णववाद
6. मंदिरों का बनाया जाना

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

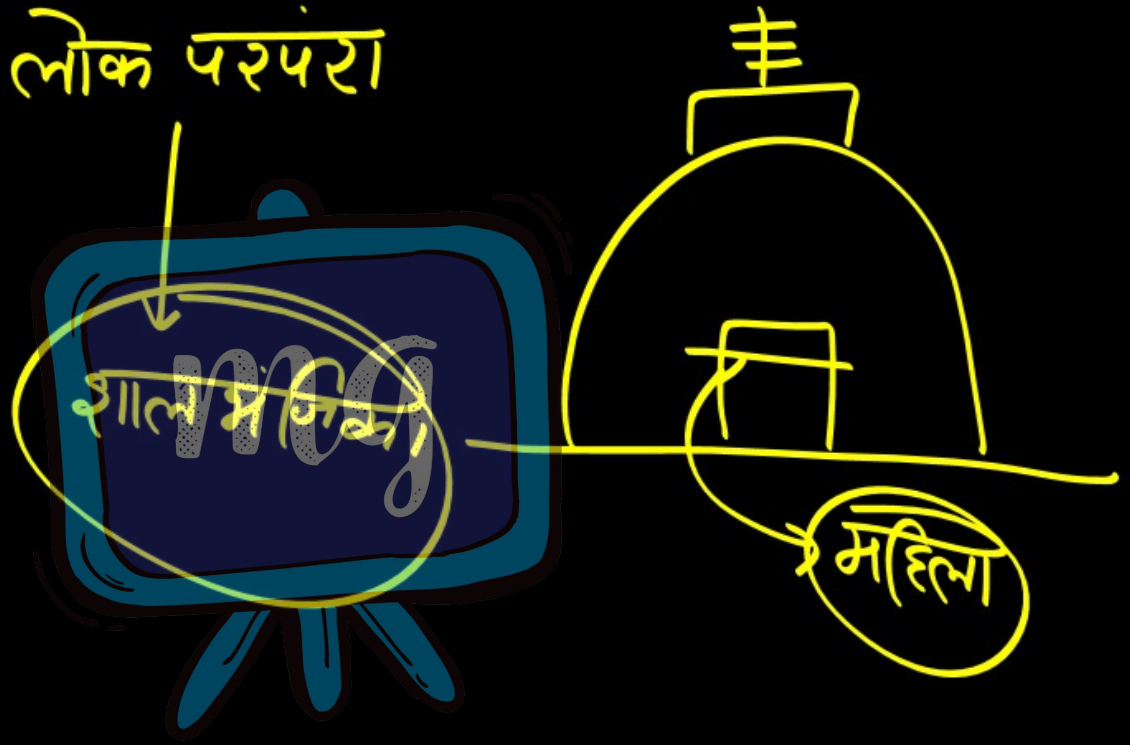

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

लोक परंपराऐं

- सांची में उत्कीर्णित बहुत सी अन्य मूर्तियां शायद बौद्ध धर्म से सीधी जुड़ी नहीं थी।

शालभंजिका :-

- इनमें कुछ सुंदर स्त्रियां भी मूर्तियों में उत्कीर्णित है जो तोरणद्वार के किनारे पर पेड़ पकड़ कर झूलती हुई दिखती हैं।

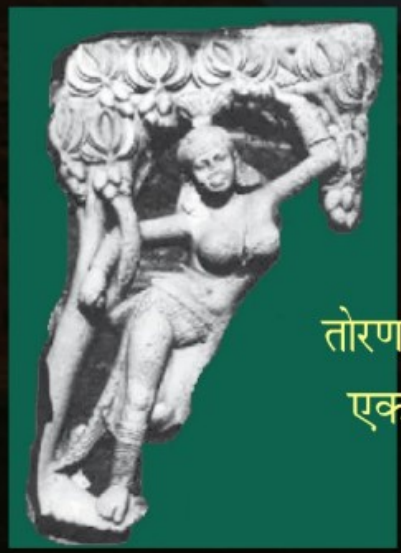

तोरणद्वार पर
एक स्त्री

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

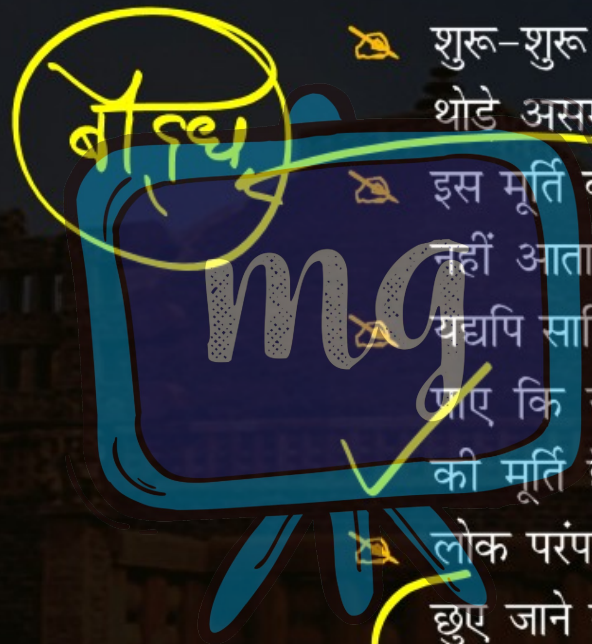

- शुरू-शुरू में विद्वान इस मूर्ति के महत्त्व के बारे में थोड़े असमंजस में थे।
- इस मूर्ति का त्याग और तपस्या से कोई रिश्ता नज़र नहीं आता था।
- यद्यपि साहित्यिक परंपराओं के अध्ययन से वे समझ पाए कि यह संस्कृत भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है।
- लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छुए जाने से वृक्षों में फूल खिल उठते थे और फल होने लगते थे।
- ऐसा लगता है कि यह एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इस कारण स्तूप के अलंकरण में प्रयुक्त हुआ।

- शालभंजिका की मूर्ति से पता चलता है कि जो लोग बौद्ध धर्म में आए उन्होंने बुद्ध-पूर्व और बौद्ध धर्म से इतर दूसरे विश्वासों, प्रथाओं और धारणाओं से बौद्ध धर्म को समृद्ध किया।
- सांची की मूर्तियों में पाए गए कई प्रतीक या चिह्न निश्चय ही इन्हीं परंपराओं से उभरे थे।

सांची में हाथी :- जानवरों के कुछ बहुत खूबसूरत उत्कीर्णन यहाँ पर पाए गए हैं।



सांची में हाथी

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इन जानवरों में हाथी, घोड़े, बंदर और गाय-बैल शामिल हैं।
- हालाँकि साँची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियाँ हैं।
- ऐसा लगता है कि यहाँ पर लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों का उत्कीर्णन किया गया था।
- साथ ही जानवरों को मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इन प्रतीकों में कमल दल और हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति प्रमुख है ।
- ये हाथी उनके ऊपर जल छिड़क रहे हैं जैसे वे उनका अभिषेक कर रहे हों।

(i) कुछ इतिहासकार उन्हें बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं।

(ii) कुछ उन्हें लोकप्रिय देवी गजलक्ष्मी मानते हैं। गजलक्ष्मी सौभाग्य लाने वाली देवी थीं जिन्हें प्राय: हाथियों के साथ जोड़ा जाता है।

(iii) कुछ इन उत्कीर्णित मूर्तियों को देखने वाले माया और गजलक्ष्मी दोनों से जोड़ते थे।

सांची में सर्प :-

कई स्तंभों पर दिखाए गए सर्पों को भी देखिए



सांची में 'सर्प'

यह प्रतीक (सर्प) लोक परंपराओं से लिया गया प्रतीत होता है जिनका ग्रंथों में हमेशा ज़िक्र नहीं होता था।

दिलचस्प बात यह है कि कला पर लिखने वाले आधुनिक इतिहासकारों में एक शुरुआती इतिहासकार जेम्स फर्गुसन ने साँची को वृक्ष और सर्प पूजा का केंद्र माना था। वे बौद्ध साहित्य से अनभिज्ञ थे। तब तक ज़्यादातर बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद नहीं हुआ था। इसलिए उन्होंने सिर्फ़ उत्कीर्णित मूर्तियों का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष निकाले थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बौद्ध स्तूपों में किन प्रतीक चिह्नों का इस्तेमाल किया जाता था?



गजलक्ष्मी & शालभंजिका का स्तूप पर मूर्ति के रूपचित्रण क्यों किया गया?

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1.  → निर्वाण
2. बुद्ध → ज्ञान प्राप्त
3.  → उपदेश
4. गजलक्ष्मी → सौभाग्य
5. शालभंजिका → +ve
6. हाथी, बंदर, घोड़ा → सुन्दरता

mg

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अतीत से प्राप्त चित्र

- पत्थर की कलाकृतियाँ लंबे समय तक सुरक्षित रह जाती हैं। इसलिए इतिहासकारों को यह आसानी से उपलब्ध हो जाती है।
- अतीत में चित्रकारी जैसे संप्रेषण के दूसरे माध्यम भी इस्तेमाल किए जाते थे। उनमें जो सबसे अच्छी हालत में बचे हुए हैं वे गुफाओं की दीवारों पर बने चित्र हैं। इनमें अजंता (महाराष्ट्र) की चित्रकारी काफ़ी प्रसिद्ध है।
- अजंता के चित्र जातकों की कथाएँ दिखाते हैं। इनमें राज दरबार का जीवन, शोभा यात्राएँ, काम करते हुए स्त्री-पुरुष और त्यौहार मनाने के चित्र दिखाए गए हैं।

महाराष्ट्र

↳ औरंगाबाद

↓ अजन्ता, एलोरा

- कलाकारों ने त्रिविम रूप देने के लिए आभाभेद तकनीक का प्रयोग किया।
- कुछ चित्र बिल्कुल स्वाभाविक और सजीव लगते हैं।



अजन्ता से एक चित्र : बैठा हुआ व्यक्ति और उसके सेवक

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बौद्ध धर्म

हीनयान

- ✓ तार्किक
- ✓ विवेकी
- × मूर्ति पूजा
- × मंदिर
  - चैत्य
  - विहार
  - स्तूप

महायान

- चमत्कारी
- मूर्ति पूजा
- बौद्ध → बढ़ाने



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

नयी धार्मिक परंपराऐं

महायान बौद्ध मत का विकास :-

- ईसा की प्रथम सदी के बाद बौद्ध अवधारणाओं और व्यवहार में बदलाव नज़र आये।
- प्रारंभिक बौद्ध मत में निब्बान के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्त्व दिया गया था। बुद्ध को भी एक मनुष्य समझा जाता था जिन्होंने व्यक्तिगत प्रयास से प्रबोधन और निब्बान प्राप्त किया।
- धीरे-धीरे एक मुक्तिदाता की कल्पना उभरने लगी। यह विश्वास किया जाने लगा कि वे मुक्ति दिलवा सकते थे।
- साथ-साथ बोधिसत्त की अवधारणा भी उभरने लगी।
- बोधिसत्तों को परम करुणामय जीव माना गया जो अपने सत्कार्यों से पुण्य कमाते थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- लेकिन वे इस पुण्य का प्रयोग दुनिया को दुखों में छोड़ देने के लिए और निब्बान प्राप्ति के लिए नहीं करते थे। बल्कि वे इससे दूसरों की सहायता करते थे।
- बुद्ध और बोधिसत्तों की मूर्तियों की पूजा इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग बन गई।
- चिंतन की इस नयी परंपरा को महायान के नाम से जाना गया।
- जिन लोगों ने इन विश्वासों को अपनाया उन्होंने पुरानी परंपरा को हीनयान नाम से संबोधित किया।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

हीनयान
↳ थेरवादी

हीनयान या थेरवाद?

महायान के अनुयायी दूसरी बौद्ध परंपराओं के समर्थकों को हीनयान के अनुयायी कहते थे। लेकिन, पुरातन परंपरा के अनुयायी खुद को थेरवादी कहते थे। इसका मतलब है वे लोग जिन्होंने पुराने, प्रतिष्ठित शिक्षकों (जिन्हें थेर कहते थे) के बताए रास्ते पर चलने वाले।



पहली सदी की
बुद्ध मूर्ति, मथुरा

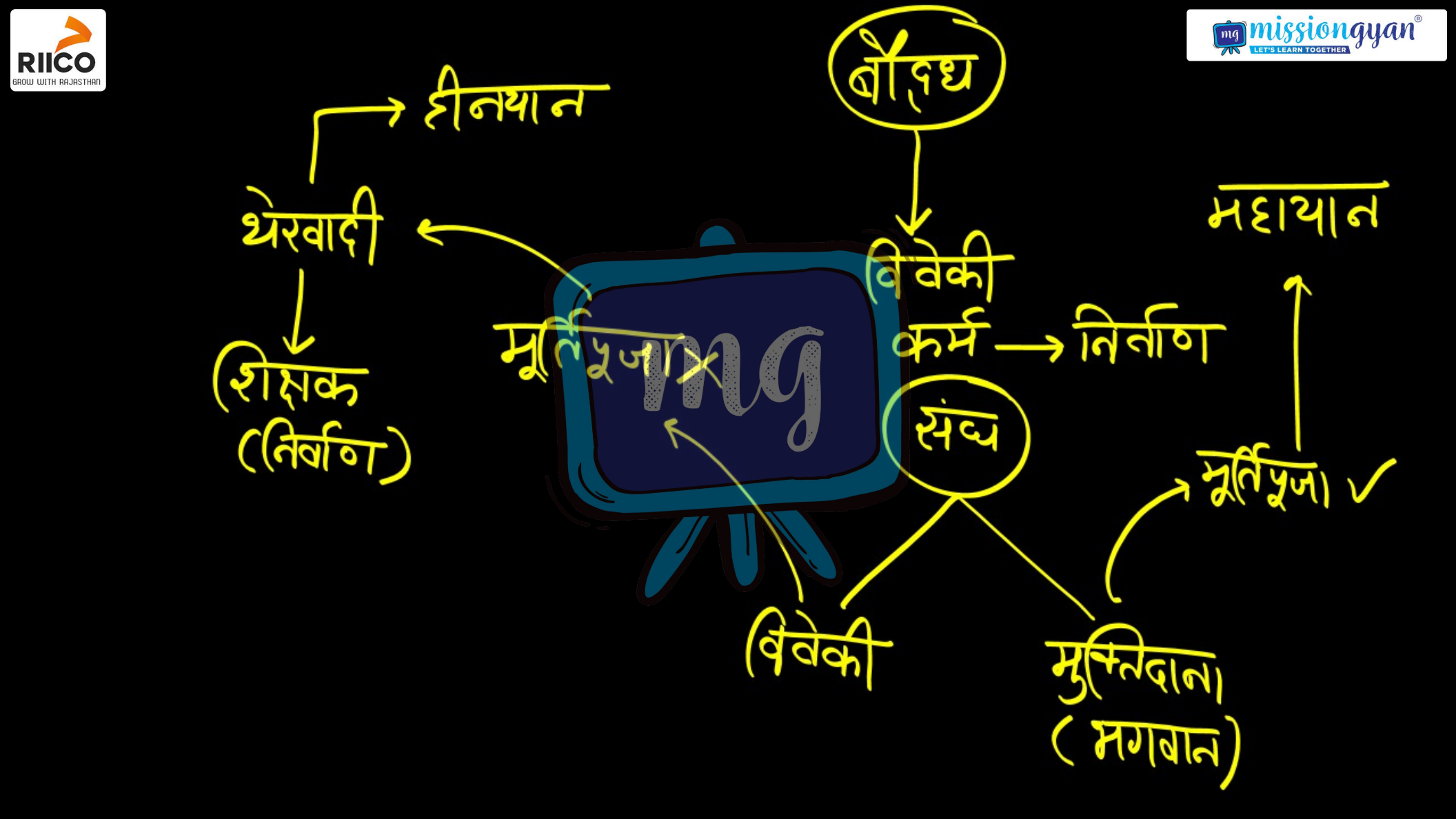
बौद्ध
हीनयान
थेरवादी
शिक्षक
(निर्वाण)
मूर्तिपूजा
विवेकी
कर्म
निर्वाण
महायान
संघ
मूर्तिपूजा
विवेकी
मुक्तिदाता
(भगवान)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

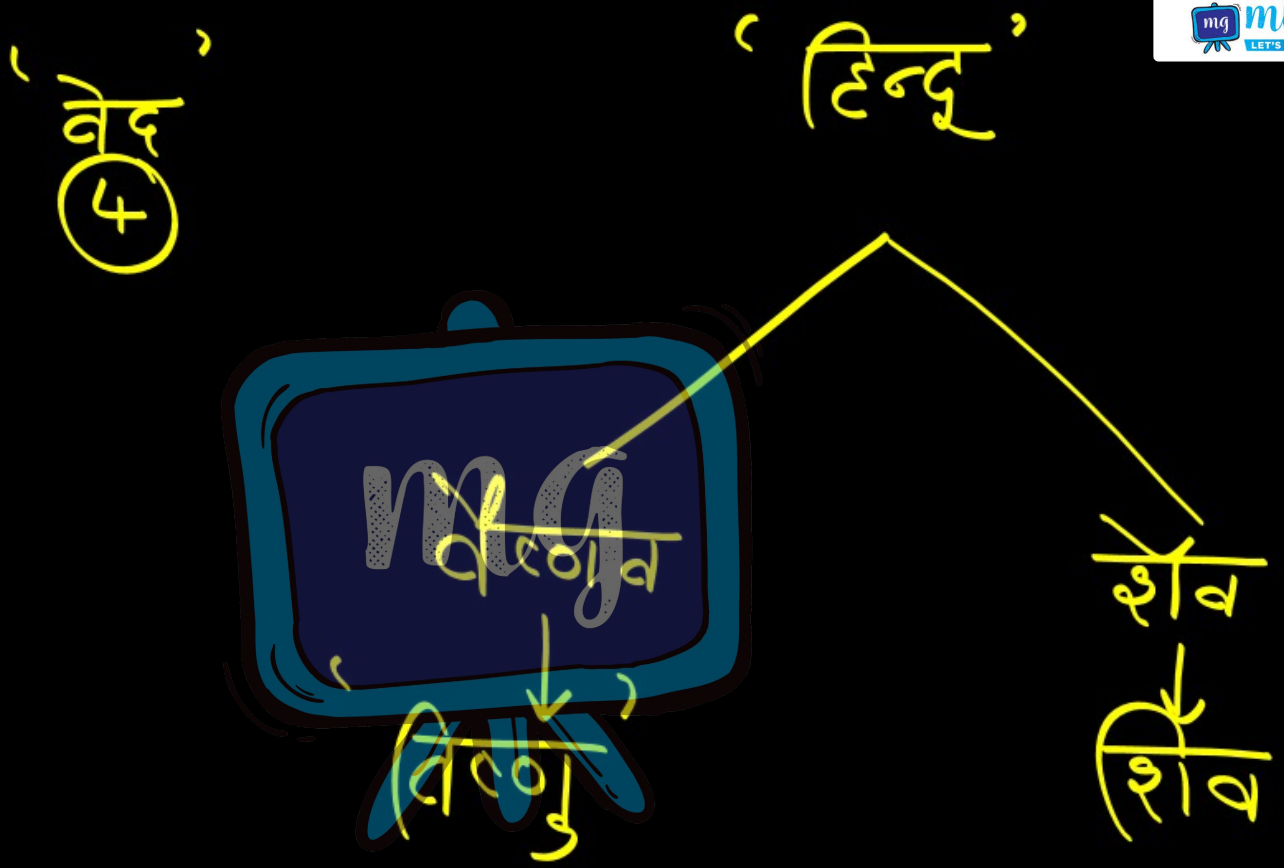

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

पौराणिक हिंदू धर्म का उदय

- मुक्तिदाता की कल्पना सिर्फ बौद्ध धर्म तक सीमित नहीं थी।
- इसी तरह के विश्वास एक अलग ढंग से उन परंपराओं में भी विकसित हो रहे थे जिन्हें आज हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है।
- इसमें
  - (i) वैष्णव – वह परंपरा जिसमें विष्णु को सबसे महत्वपूर्ण देवता माना जाता है।
  - (ii) शैव – वह संकल्पना जिसमें शिव परमेश्वर है भी शामिल थीं।
- इसके अंतर्गत एक विशेष देवता की पूजा को खास महत्त्व दिया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इस प्रकार की आराधना में उपासना और ईश्वर के बीच का रिश्ता प्रेम और समर्पण का रिश्ता माना जाता था। इसे भक्ति कहते हैं।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

वैष्णववाद

- इसमें कई अवतारों के इर्द-गिर्द पूजा पद्धतियाँ विकसित हुईं।
- इस परंपरा के अंदर दस अवतारों की कल्पना है।
- यह माना जाता था कि पापियों के बढ़ते प्रभाव के चलते जब दुनिया में अव्यवस्था और नाश की स्थिति आ जाती थी तब विश्व की रक्षा के लिए भगवान अलग-अलग रूपों में अवतार लेते थे।
- संभवतः अलग-अलग अवतार देश के भिन्न-भिन्न हिस्सों में लोकप्रिय थे।
- इन सब स्थानीय देवताओं को विष्णु का रूप मान लेना एकीकृत धार्मिक परंपरा को दर्शाता था।
- कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- दूसरे देवताओं की भी मूर्तियाँ बनीं। शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था। लेकिन उन्हें कई बार उनको मनुष्य के रूप में भी दिखाया गया है।
- ये सारे चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे।
- इन देवताओं की खूबियों और प्रतीकों को उनके शिरोवस्त्र, आभूषण, आयुधों (हाथ में धारण अस्त्र) और बैठने की शैली से इंगित किया जाता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



विष्णु का वराह अवतार : जिसने उन्हें पृथ्वी देवी को बचाते हुए दिखाया गया है। (लगभग छठी सदी, एहोल, कर्नाटक)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



महाबलीपुरम् : (तमिलनाडु) में दुर्गा
की एक मूर्ति (छठी सदी)

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तियों के अर्थ तथा पुराण :-

- इन मूर्तियों के अंकन का मतलब समझने के लिए इतिहासकारों को इनसे जुड़ी हुई कहानियों से परिचित होना पड़ता है।
- कई कहानियाँ प्रथम सहस्राब्दि के मध्य से ब्राह्मणों द्वारा रचित पुराणों में पायी जाती है जिनमें बहुत से ऐसे किस्से हैं जो सैकड़ों वर्ष पहले रचने के बाद सुने और सुनाये जाते रहे थे।
- इनमें देवी देवताओं की भी कहानियां हैं।
- इन्हें संस्कृत श्लोकों में लिखा गया था तथा इन्हें ऊंची आवाज में पढ़ा जाता था जिसे कोई भी सुन सकता था।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- महिलाऐं और शूद्र जिन्हें वैदिक साहित्य पढ़ने-सुनने की अनुमति नहीं थी, पुराणों को सुन सकते थे।
- पुराणों की ज्यादातर कहानियां आपसी मेल-जोल से विकसित हुई।
- पुजारी, व्यापारी और सामान्य स्त्री-पुरूष एक जगह से दूसरी जगह आते जाते समय अपने विश्वासों और अवधारणाओं का आदान-प्रदान करते थे।
- उदाहरण के लिए हम जानते हैं कि - वासुदेव - कृष्ण मथुरा इलाके के महत्वपूर्ण देवता थे। कई शताब्दियों के दौरान उनकी पूजा देश के दूसरे इलाकों में भी फैल गई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

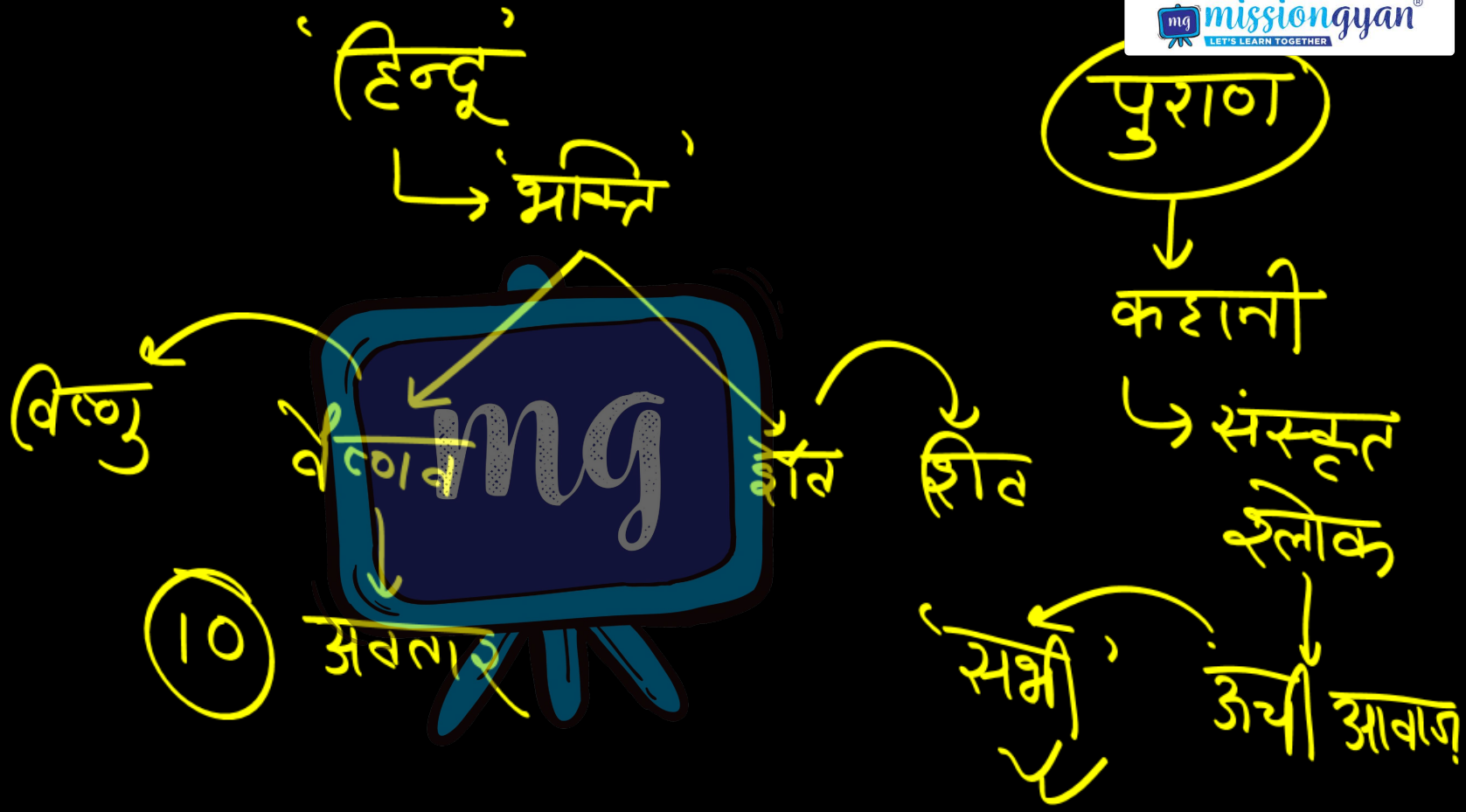

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

परिभाषिक करे ?

ए) महायान

बी) हीनयान (थेरवादी)

सी) वैष्णव

डी) शैव

ई) बौद्ध

एफ) पुराण

